प्रथमः पाठः

रामस्य पितृभक्तिः

(वाल्मीकिरामायणात्)

[प्रस्तुत पाठ 'रामस्य पितृभक्तिः' वाल्मीकि रामायण के अन्तर्गत अयोध्याकाण्ड के १८वें और १९वें सर्ग से संकलित है। संस्कृत-साहित्य में वाल्मीकि द्वारा लिखा गया रामायण संसार का आदिकाव्य (सबसे पहला काव्य) माना जाता है। सम्बन्धित सारांश इस प्रकार है– राम के राज्याभिषेक के समय जब महारानी कैकेयी (महाराज दशरथ की पत्नी) ने अपने वरों की प्राप्ति के लिए आग्रह किया, तब महाराज दशरथ कैकेयी द्वारा माँगे गये वरों को पूर्ण कर देते हैं तथा सुमन्त्र द्वारा अपने पास राम को बुलाया। जब राम दशरथ और कैकेयी के पास गये तो देखा कि पिता (दशरथ) का मुख सूखा हुआ, विषाद में डूबे तथा बड़े दीन दिखायी दे रहे थे। सर्वप्रथम उन्होंने (राम ने) पूज्य पिताजी के चरणों में प्रणाम तथा बहुत सावधानी के साथ कैकेयी के चरणों में नमस्कार किया। दीन दशा में पड़े हुए दशरथ एक बार 'राम' कहकर चुप हो गये। राम विचार करने लगे कि आज पिताजी आनन्दित होकर मुझसे बातें क्यों नहीं करते? शोक से व्यथित श्रीराम कैकेयी से कहते हैं कि क्या मुझसे आज कोई गलती हो गयी जिसके कारण पिताजी मुझसे नाराज हैं। मुझे बताओ।

महान् पुरुष राम द्वारा पूछने पर कैकेयी ने ढीठता के साथ अपने हित के वचन कहे। कैकेयी के वचनों को सुनकर राम बहुत ही दुःखित हुए और राजा के पास बैठी हुई देवी (कैकेयी) से बोले–हे देवि! मैं पिता की आज्ञा से अग्नि में भी गिर (कूद) सकता हूँ। मैं गुरु, राजा तथा पिता के द्वारा आदेश देने पर विष खा सकता हूँ तथा गहरे समुद्र में डुबकी लगा सकता हूँ। हे माँ! राजा ने जो भी वचन मन में सोचा है वह वचन बताइये, मैं अवश्य ही पूरा करूँगा। कैकेयी के द्वारा दोनों वरों को सुनकर तथा पिता के वचनों को पूर्ण करने के लिए श्रीराम वन जाने का निश्चय करते हैं।]

स ददर्शासने रामो निषण्णं पितरं शुभे।
कैकेय्या सहितं दीनं मुखेन परिशुष्यता।।१।।

स पितुश्चरणौ पूर्वमभिवाद्य विनीतवत्।
ततो ववन्दे चरणौ कैकेय्याः सुसमाहितः।।२।।

रामेत्युक्त्वा तु वचनं वाष्पपर्याकुलेक्षणः।
शशाक नृपतिर्दीनो नेक्षितुं नाभिभाषितुम्।।३।।

चिन्तयामास चतुरो रामः पितृहिते रतः।
किंस्विदद्यैव नृपतिर्न मां प्रत्यभिनन्दति।।४।।

अन्यदा मां पिता दृष्ट्वा कुपितोऽपि प्रसीदति।
तस्य मामद्य सम्प्रेक्ष्य किमायासः प्रवर्त्तते।।५।।

स दीन इव शोकार्त्तो विषण्णवदनद्युतिः।
कैकेयीमभिवाद्यैव रामो वचनमब्रवीत्।।६।।

कच्चिन्मया नापराद्धमज्ञानाद् येन मे पिता।
कुपितस्तन्ममाचक्ष्व त्वमेवैनं प्रसादयः।।७।।

अतोषयन् महाराजमकुर्वन् वा पितुर्वचः।
मुहूर्त्तमपि नेच्छेयं जीवितुं कुपिते नृपे।।८।।

यतोमूलं नरः पश्येत् प्रादुर्भावमिहात्मनः।
कथं तस्मिन्न वर्त्तेत प्रत्यक्षे सति दैवते।।९।।

एवमुक्ता तु कैकेयी राघवेण महात्मना।
उवाचेदं सुनिर्लज्जा धृष्टमात्महितं वचः।।१०।।

प्रिय त्वामप्रियं वक्तुं वाणी नास्य प्रवर्त्तते।
तदवश्यं त्वया कार्यं यदनेनाश्रुतं मम।।११।।

एष मह्यं वरं दत्वा पुरा मामभिपूज्य च।
स पश्चात् तप्यते राजा यथान्यः प्राकृतस्तथा।।१२।।

यदि तद् वक्ष्यते राजाशुभं वा यदि वाऽशुभम्।
करिष्यसि ततः सर्वमाख्यास्यामि पुनस्त्वहम्।।१३।।

एतत्तु वचनं श्रुत्वा कैकेय्या समुदाहृतम्।
उवाच व्यथितो रामस्तां देवीं नृपसन्निधौ।।१४।।

अहो धिङ् नार्हसे देवि वक्तुं मामीदृशं वचः।
अहं हि वचनाद् राज्ञः पतेयमपि पावके।।१५।।

भक्षयेयं विषं तीक्ष्णं पतेयमपि चार्णवे।
नियुक्तो गुरुणा पित्रा नृपेण च हितेन च।।१६।।

तद् ब्रूहि वचनं देवि ! राज्ञो यदभिकाङ्क्षितम्।
करिष्ये प्रतिजाने च रामो द्विर्नाभिभाषते।।१७।।

तमार्जवसमायुक्तमनार्या सत्यवादिनम्।
उवाच रामं कैकेयी वचनं भृशदारुणम्।।१८।।

पुरा दैवासुरे युद्धे पित्रा ते मम राघव!
रक्षितेन वरौ दत्तौ सशल्येन महारणे।।१९।।

तत्र मे याचितो राजा भरतस्याभिषेचनम्।
गमनं दण्डकारण्ये तव चाद्यैव राघव!।।२०।।

यदि सत्यप्रतिज्ञं त्वं पितरं कर्त्तुमिच्छसि।
आत्मानं च नरश्रेष्ठ! मम वाक्यमिदं शृणु।।२१।।

त्वयारण्यं प्रवेष्टव्यं नव वर्षाणि पञ्च च।
भरतः कोशलपतेः प्रशास्तु वसुधामिमाम्।।२२।।

तदप्रियममित्रघ्नो वचनं मरणोपमम्।
श्रुत्वा न विव्यथे रामः कैकेयीं चेदमब्रवीत्।।२३।।

एवमस्तु गमिष्यामि वनं वस्तुमहं त्वितः।
जटाचीरधरो राज्ञः प्रतिज्ञामनुपालयन्।।२४।।

अहं हि सीतां राज्यं च प्राणानिष्टान् धनानि च।
हृष्टो भ्रात्रे स्वयं दद्यां भरताय प्रचोदितः।।२५।।

न ह्यतो धर्मचरणं किञ्चिदस्ति महत्तरम्।
यथा पितरि शुश्रूषा तस्य वा वचनक्रिया।।२६।।

अभ्यास-प्रश्न

१. निम्नलिखित श्लोकों की हिन्दी में ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए–

(क) अन्यदा मां पिता दृष्ट्वा कुपितोऽपि प्रसीदति।
तस्य मामद्य सम्प्रेक्ष्य किमायासः प्रवर्त्तते।।

(ख) अहं हि सीतां राज्यं च प्राणानिष्टान् धनानि च।
हृष्टो भ्रात्रे स्वयं दद्यां भरताय प्रचोदितः।।

२. निम्नलिखित सूक्ति की ससन्दर्भ हिन्दी में व्याख्या कीजिए–
'रामो द्विर्नाभिभाषते'।

३. निम्नलिखित श्लोकों का संस्कृत में अर्थ लिखिए–

(क) स ददर्शासने रामो विषण्णं पितरं शुभे।
कैकेय्या सहितं दीनं मुखेन परिशुष्यता।।

(ख) पुरा दैवासुरे युद्धे पित्रा ते मम राघव!
रक्षितेन वरौ दत्तौ सशल्येन महारणे।।

४. 'रामस्य पितृभक्तिः' पाठ किस महाकाव्य से अवतरित है?

➨ आन्तरिक मूल्यांकन

राम की पितृभक्ति महान् है। आप अपने माता-पिता से कैसा व्यवहार करते हैं? उल्लेख कीजिए।

●●●